Toppersnotes®
Unleash the topper in you

इलाहबाद उच्च न्यायालय

RO/ARO

समीक्षा अधिकारी / सहायक समीक्षा अधिकारी

भाग 1

भारत का इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन

SIERRA INNOVATIONS

संस्करण – **March-2024**

कॉपीराइट © 2024 **SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.**

सभी अधिकार सुरक्षित है। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति बिना प्रस्तुत या वितरित या किसी भी तरह से जिसमें फोटोकॉपी या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल तरीके शामिल है, में प्रेषित नहीं हो सकता है। किसी भी प्रकार की छेड़छाड या संशोधन करना कॉपीराइट कानूनों का उल्लघंन होगा और कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होगा। सम्पादक का नैतिक अधिकार प्रमुख किया गया है। यह SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD. के द्वारा मुद्रित किया गया है।

किसी भी प्रकार की समस्याओं, सुझावों और फीड़बैक के लिए सम्पर्क करें :–

hello@toppersnotes.com

मुख्य कार्यालय – टॉपर्सनोट्स
SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.
H–176, ओसवाल फैक्ट्री के पास,
मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया,
मालवीय नगर, जयपुर,
राजस्थान–302017

Website- www.toppersnotes.com
Email- hello@toppersnotes.com
Phone – 9614-828-828

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	1
2	सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	6
3	वैदिक काल	13
4	महाजनपद काल (600-300 BC)	20
5	मौर्य साम्राज्य	26
6	मौर्योत्तर काल	35
7	संगम युग	42
8	गुप्त युग	47
9	गुप्तोत्तर काल	53
10	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	61
11	पूर्व मध्यकालीन भारत (750-1200 AD)	79
12	अरब आक्रमण	91
13	दिल्ली संतलत	96
14	मुगल साम्राज्य	106
15	मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य	122
16	मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन	134
17	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	149
18	मुगल साम्राज्य का पतन	156
19	1857 का विद्रोह	160
20	1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन	166
21	सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन	169
22	शिक्षा और प्रेस का विकास	181
23	ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन	188

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण 1885-1905)	199
25	उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग चरमपंथी चरण (1905-1909)	204
26	जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917-1925)	215
27	स्वराज के लिए संघर्ष (1925-1939)	223
28	स्वतंत्रता की ओर (1940-1947)	238
29	महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ	249
30	आजादी के बाद से भारत के युद्ध	257

1 CHAPTER प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

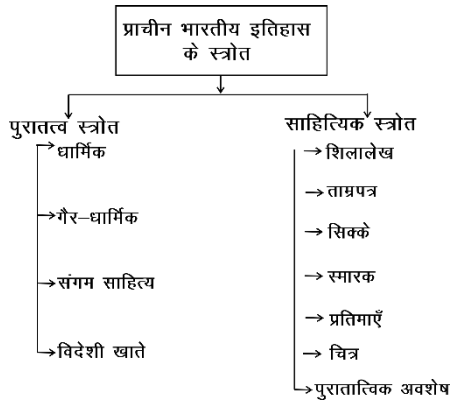

A. पुरातत्व स्रोत

- **मुद्राशास्त्र** - सिक्कों का अध्ययन।
- **पुरालेख**- अभिलेखों का अध्ययन।
- **पुरातत्व** = 'पुरालेख' + 'लोगिया' (पुरातन = प्राचीन और लोगिया = ज्ञान)।

1. शिलालेख / एपिग्राफ

- पुरातत्व स्रोतों का **सबसे महत्वपूर्ण, प्रामाणिक और विश्वसनीय हिस्सा।** तुलनात्मक रूप से कम पक्षपाती।
- **सबसे पुराने शिलालेख** - सम्राट अशोक- प्रमुख रूप से **ब्राह्मी लिपि में**।
- **अन्य महत्वपूर्ण शिलालेख –**

नाम	स्थान	वर्णन
नागनिका का शिलालेख	नानेघाट, **महाराष्ट्र**	सातवाहन राजा **सतकर्णी के बारे में**
नासिक शिलालेख	नासिक गुफाएँ, **महाराष्ट्र**	गौतमीपुत्र **सतकर्णी के बारे में**
प्रयाग प्रशस्ति/इलाहाबाद स्तंभ	इलाहाबाद, **उत्तर प्रदेश**	**समुद्रगुप्त के बारे में** हरिसेन द्वारा संस्कृत में लिखा गया
ऐहोल शिलालेख	**कर्नाटक**	बादामी के **चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय** के बारे में रविकीर्ति द्वारा लिखा गया।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरि, **ओडिशा**	**राजा खारवेल** के बारे में

2. ताम्र - पत्र

- **'भूमि-अनुदान' के लिए उत्कीर्ण** और अनुदानग्राही को जारी किया गया।
- **ताँबे की** 3 **प्लेटें**, ताँबे की गाँठ के माध्यम से एक-दूसरे से बंधी हुई।
- **ऊपरी और अंतिम भागों को उकेरा नहीं गया है** क्योंकि ये समय के साथ धुंधले हो जाते हैं।
- उस काल की **सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी** देता है।
- **उदा**. सोहगौरा ताम्रलेख हमें गंभीर सूखे और भोजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए अधिकारियों द्वारा किए गए उपायों के बारे में सूचित करता है।

3. सिक्के

- **व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों** और **आर्थिक और तकनीकी विकास** के बारे में सूचित करता है।
- उल्लिखित तिथियाँ हमें **राजाओं के कालक्रम** के बारे में जानने में मदद करती हैं।
- **भारत के पहले सिक्के** - **'पंचमार्क** सिक्के' आहत / पंचिंग विधि से बनाए गए।
- **संभवतः व्यापारिक संघों द्वारा** चलाए गए थे - किसी **शासक द्वारा नहीं।**
- **सिक्कों** में **शुद्धता** का अनुपात **शासक की आर्थिक स्थिति** और उसके समय की व्याख्या करता है।
- **पहला सोने का सिक्का** - **इंडो-यूनानियों द्वारा** जारी किया गया ।
- **कुषाणों** द्वारा **शुद्धतम सोने के सिक्के** जारी किये गए ।
- **सबसे** ज्यादा लेकिन **अशुद्ध सोने** के **सिक्के गुप्तों द्वारा** जारी किये गए।

4. स्मारक

- इनका अध्ययन हमें **तकनीकी कौशल, जीवन स्तर, आर्थिक स्थिति** और उस **समय की स्थापत्य** शैली की **व्याख्या** करने में मदद **करता है।**
- **शासको** या **राजवंशो** की **समृद्धि का चित्रण** करता है।
- **3 प्रमुख शैलियाँ-**
  - उत्तर में **नागर शैली**।
  - दक्षिण में **द्रविड़ शैली**।
  - दक्कन में **वेसर शैली**।

5. प्रतिमाएँ

- **हड़प्पा मूर्तिकला -** पत्थर, स्टीटाइट, मिट्टी, टेराकोटा, चूना, कांसे, हाथी दांत, लकड़ी आदि से बनी ।
  - **उपयोग** - मूर्तियाँ, खिलौने, मनोरंजन ।
- **कांस्य प्रतिमाएँ** (हड़प्पा सभ्यता) और **खिलौने** (दैमाबाद)
- **मौर्यकालीन मूर्तियाँ** - **दीदारगंज** की **यक्षी** - लोगों की समसामयिक संपन्नता और सौन्दर्य बोध।
- **कनिष्क की मूर्ति**- राजा की **विदेशी उत्पत्ति** और **विदेशी** शैली की **पोशाक**, जैसे जूते, ओवरकोट आदि।

6. चित्र

- **चित्रों के प्रारंभिक उदाहरण**- **भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) - मध्य पाषाण काल के गुफा-निवासियों द्वारा आसपास की प्रकृति के रंगों और औजारों का उपयोग करके बनाए गए ।
- **अजंता चित्रकला** - धार्मिक विचारधारा, आध्यात्मिक शांति, आभूषण, वेशभूषा, विदेशी आगंतुकों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।
- **चोल चित्रकला** - **चोल राजव्यवस्था** के **'दिव्य राजत्व' की अवधारणा** को प्रदर्शित करती हैं।

7. पुरातत्व अवशेष

(i) मृदभांड

- **आद्य-इतिहास से प्रारंभिक मध्य काल** तक मुख्य उपकरण।
- **विभिन्न वस्तुओं से बने** जैसे कटोरे, प्लेट, बर्तन आदि में।
- **संस्कृति**, **आकार**, **वस्त्र**, **सतह-उपचार** (वस्त्र, रंग, डिजाइन, पेंटिंग), मृदभांड बनाने की **तकनीक** आदि के **अनुसार विभेदित।**
- **विशिष्ट संस्कृति**/अवधि के लिए **विशिष्ट मृदभांड** समर्पित किये गए है।

(ii) मणिकाएँ

- **विभिन्न सामग्रियों**, जैसे, पत्थर, अर्द्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट, कैल्सेडनी, क्रिस्टल, फ़िरोज़ा, लैपिस-लाजुली), कांच, टेरा कोटा, हाथीदांत, खोल, धातुओं जैसे सोना, तांबा आदि **से बने** ।
- **विभिन्न आकार** जैसे गोल, चौकोर, बेलनाकार, बैरल के आकार **के** ।
- एक **विशिष्ट अवधि** के **तकनीकी विकास** और **सौंदर्यबोध** को जानने **के लिए एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल** किए जा सकते हैं।

(iii) जीव अवशेष/हड्डियाँ

- **उत्खनन** से **बड़ी मात्रा** में **हड्डियों** या **जीवों अवशेषों** का पता चला है।
- वे उस **विशेष स्थल के आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रकाश** डालते हैं।
- **संबंधित लोगों** की **आहार संबंधी आदतों को समझने में मदद** करते हैं।

(iv) पुष्प अवशेष

- **संबंधित लोगों** की **ऐतिहासिक पारिस्थितिकी** और **आहार संबंधी आदतों** के बारे में **जानकारी** देते हैं।

B. साहित्यिक स्रोत

1. धार्मिक स्रोत

- **आधार स्रोत**: ब्राह्मण ग्रंथ जैसे वैदिक ग्रंथ, सूत्र, स्मृति, पुराण और महाकाव्य।

वैदिक ग्रंथ	• **ऋग्वेद**- **सबसे पुराना** - हमें ऋग्वैदिक समाज के बारे में बताता है। • **साम वेद**, **यजुर्वेद** और **अथर्ववेद** - **उत्तर वैदिक काल** के समाज **के बारे में** जानकारी देता है। • **900 साल** (**1500B.C-600B.C) का इतिहास** बनाता है । • **आर्यों** की उत्पत्ति, उनकी राजनीतिक संरचना, उनके समाज, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक उपलब्धियों आदि **के बारे में जानकारी देता है**।
सूत्र	• सूत्र में पिरोए गए सुन्दर मोतियों की तरह **शब्द या स्तोत्र का संकलन**। • **वैदिक काल की जानकारी** देता है। • **छह भाग**: शिक्षा, व्याकरण, छंद, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष
उपवेद	• **आयुर्वेद** - चिकित्सा विज्ञान से संबंधित - ऋग्वेद का उपवेद। • **गंधर्व वेद** - संगीत से संबंधित- सामवेद का उपवेद। • **धनुर वेद** - युद्ध कौशल, हथियार और गोला-बारूद से संबंधित- यजुर्वेद का उपवेद। • **शिल्प वेद** - मूर्तिकला और वास्तुकला से संबंधित - अथर्ववेद का उपवेद।

स्मृति ग्रंथ	• **मनुस्मृति** - सबसे पुराना स्मृति पाठ (200B.C- 200A.D)। • **याज्ञवल्क्य स्मृति** (100A.D - 300A.D) के बीच संकलित। • **नारद स्मृति** (300A.D-400A.D) और **पाराशर स्मृति** (300A.D-500A.D) - गुप्तों की सामाजिक और धार्मिक स्थितियों के बारे में जानकारी देता है।
बौद्ध साहित्य	• **पिटक** - **सबसे पुराने** बौद्ध ग्रंथ। ○ भगवान **बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद** संकलित। ○ **3 प्रकार**- ■ **सुत्त पिटक**- धार्मिक विचारधारा और बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं। ■ **विनय पिटक**- बौद्ध संघ के नियम शामिल हैं। ■ **अभिधम्म पिटक**- बौद्ध दर्शन शामिल हैं। • **जातक कथाएँ** - भगवान **बुद्ध के पिछले जन्म से संबंधित उपाख्यान** - संकलन पहली शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था लेकिन वर्तमान रूप दूसरी शताब्दी ईस्वी में संकलित किया गया था। • **मिलिंदपन्हो** - बौद्ध ग्रंथ - ग्रीक शासक **मिनांडर** (**मिलिन्द**) **और बौद्ध संत नागसेना के बीच दार्शनिक संवाद** के बारे में जानकारी देता है। • **दिव्यावदान** - **चौथी शताब्दी ईस्वी** में पूर्ण रूप से लिखा गया - **विभिन्न शासकों** के बारे में जानकारी। • **आर्यमंजुश्रीमुलकल्प** - बौद्ध दृष्टिकोण से **गुप्त साम्राज्य के विभिन्न शासकों के बारे में** जानकारी। • **अंगुत्तरनिकाय** - **सोलह महाजनपदों के नाम** देता है।
सिंहली ग्रंथ	• इसमें **दीपवंश** और **महावंश** - बौद्ध ग्रंथ शामिल हैं। • **दीपवंश** – 4वी शताब्दी ई. • **महावंश** - 5वीं शताब्दी ई. • उस समय के **सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी** प्रदान करता है। • **भारत और विदेशी राज्यों के सांस्कृतिक संबंधों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
जैन ग्रंथ	• **मुख्य ग्रंथ**- आगम ग्रंथ। • **कुल ग्रंथ**- 12 । • **आचारंगसूत्र** - आगम ग्रंथ का हिस्सा - **महावीर की शिक्षाओं** पर आधारित है और जैन संतों के आचरण के बारे में बात करता है। • **व्याख्या प्रज्ञापति / भगवती सूत्र** - **महावीर के जीवन** के बारे में । • **नयाधम्मकहा** - भगवान **महावीर की शिक्षाओं** का संकलन। • **भगवतीसूत्र** - 16 **महाजनपदों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है। • **भद्रबाहुचरित** - जैन आचार्य **भद्रबाहु** और **चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर प्रकाश** डालता है। • **परिशिष्टपर्वन** - सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ - **हेमचंद्र द्वारा** 12 **वीं शताब्दी ईस्वी** में लिखा गया।
पुराण	• **स्मृति के बाद संकलित।** • मुख्य रूप से 18 । • **प्राचीन पुराण** - मार्कंडेय पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण। • **बाकी बाद में बनाए गए थे।** • **मत्स्य**, **वायु** और **विष्णु पुराणों** में प्राचीन **भारतीय राजवंशों की जानकारी** मिलती हैं । • **महाभारत के युद्ध के बाद** शासन करने वाले राजवंशों **का एकमात्र उपलब्ध स्रोत।** • **विभिन्न राजवंशों** और **उनके पदानुक्रम** (निम्नतम से उच्चतम तक) **का कालक्रम** प्रदान करता है**।**
महाकाव्य	• **ब्राह्मण ग्रंथों** का एक **हिस्सा** • **सबसे महत्वपूर्ण**- **महाभारत** और **रामायण।** • **रामायण** - **वाल्मीकि** द्वारा रचित - मौर्य काल के बाद। • **महाभारत** - **वेद व्यास** द्वारा रचित - गुप्त काल में पूरा हुआ - **शुरू में** नाम **जय संहिता / भारत** रखा गया।

2. गैर-धार्मिक स्त्रोत

- **समाज के** लगभग सभी **पहलुओं पर प्रकाश** डालता है ।
- **कुछ गैर**-**धार्मिक ग्रंथ** हैं -
  - **पाणिनि की अष्टाध्यायी** - भारत का **सबसे पुराना व्याकरण**/साहित्य - **मौर्य**-**पूर्व** काल की राजनीतिक**,** सामाजिक और धार्मिक **स्थिति की जानकारी।**
  - **मुद्राराक्षस**- **विशाखदत्त** द्वारा लिखित- **मौर्य काल के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
  - **अर्थशास्त्र** - **कौटिल्य** / विष्णुगुप्त / चाणक्य द्वारा लिखित - 15 **भागों में विभाजित** - भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, मौर्य युग की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

- **पतंजलि का महाभाष्य** और **कालिदास का मालविकाग्निमित्रम** - **'शुंग वंश'** के बारे में जानकारी।
- **वात्स्यायन का कामसूत्र** - सामाजिक जीवन, शारीरिक संबंध, पारिवारिक जीवन आदि की जानकारी प्रदान करता है।
- **शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्'** और **दण्डिन का 'दशकुमारचरित'** - उस काल के सामाजिक जीवन की जानकारी प्रदान करता है।

3. संगम साहित्य

- **प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य**।
- **इकट्ठे हुए कवियों द्वारा** निर्मित (संगम)।
- **डेल्टाई तमिलनाडु** में रहने वाले लोगों के **सामाजिक**, **आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन के बारे में** बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।
- इसमें **'सिलप्पादिकारम'** और **'मणिमेकलई' शामिल** हैं।

संगम साहित्य

संगम साहित्य	लेखक	विषय / प्रकृति / संकेत
अगत्तीयम	अगस्त्य	अक्षरों के व्याकरण पर एक कार्य
तोल्काप्पियम (तमिल व्याकरण)	तोलकापिय्यार	व्याकरण और कविता पर एक ग्रंथ
एट्टुकाई	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पट्टुपट्टू	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पेटिनेंकिलकनक्कू (18 लघु कार्य)	-	एक उपदेशात्मक कार्य
कुरल (मुप्पाल)	तिरुवल्लुवर	राजनीति, नैतिकता, सामाजिक मानदंडों पर एक ग्रंथ
शिलप्पादिकारम	इलांगो आदिगल	कोवलन और माधवी की एक प्रेम कहानी
मणिमेकलई	सीतलै सत्तनार	मणिमेकलई का साहसिक कार्य
सिवाका चिंतामणि	तिरुत्तकरदेव	एक संस्कृत ग्रंथ
भारतम	पेरुदेवनार	अंतिम महाकाव्य
पन्निरुपदलम (व्याकरण)	अगस्त्य के 12 शिष्य	पुरम साहित्य पर एक व्याकरणिक कार्य

4. विदेशी खाते

- **ग्रीक**, **रोमन**, **चीनी** और **अरब यात्रियों** के लेखन से मिलकर बने है।
- **राजनीतिक** और **सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश** डालते है।
- **ग्रीक या रोमन लेखक -**
  - **हेरोडोटस**-
    - **विश्व के प्रथम इतिहासकार** माने जाते हैं।
    - **फारसियों की तरफ से लड़ने वाले भारतीय सैनिकों का उल्लेख** किया।
  - **मेगस्थनीज**-
    - **सेल्यूकस निकेटर के राजदूत,** चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में तैनात।
    - **कार्य** - **इंडिका** - **पाटलिपुत्र** के नक्शे **का विवरण** देता है।
    - **सामाजिक संरचना**, **जाति-व्यवस्था**, **जाति-संबंध** आदि के ऊपर **उल्लेख।**
    - मूल इंडिका खो गई है।
  - **एरिथ्रियन सागर का पेरिप्लस**-
    - इसे कथित तौर पर **मिस्र के तट पर** एक **मछुआरे ने लिखा** था।
    - **प्रारंभिक ऐतिहासिक काल** के दौरान **भारत-रोमन व्यापार** पर निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ **जानकारी** देता है।
    - **भारत के तट-रेखा पर बंदरगाहों**, **भारत** में **व्यापार केंद्रों, व्यापार-मार्गों** और बंदरगाहों को जोड़ने, **केंद्रों के बीच** की **दूरी**, **व्यापार** की **वस्तुओं**, **व्यापार** की वार्षिक **मात्रा**, **जहाजों के प्रकार** आदि **के बारे में** सूचित करता है।
- **चीन**
  - **फाह्यान** (**फा जियान**)-
    - **गुप्त काल के दौरान** भारत आए।
    - **बौद्ध भिक्षु** - देवभूमि (अर्थात् भारत) से ज्ञान प्राप्त करने और बौद्ध तीर्थ केन्द्रों का दौरा करने के लिए भारत आए।
  - **ह्वेनसांग** (**जुआन जांग**)-
    - **हर्षवर्धन के** शासनकाल के **दौरान** भारत का दौरा किया।
    - **बौद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण** किया, **नालंदा विश्वविद्यालय में ठहरे।**
    - **बौद्ध धर्म का अध्ययन किया**, मूल बौद्ध रचनाएँ पढ़ीं, मूल पांडुलिपियाँ और स्मृति चिन्ह एकत्र किए, प्रतियां बनाईं, **हर्ष की सभा में भाग लिया**।
    - चीन में, **उन्होंने 'सी-यू-की'** (पश्चिमी क्षेत्रों पर ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स) **लिखा** - भारत में उनके अनुभव का विशद विवरण डेटा हैं।
    - **राजाओं विशेष रूप से हर्ष** और उनकी उदारता, भारत में लोगों और विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाजों, जीवन शैली आदि **की जानकारी** देता है।
- **अन्य क्रॉनिकल्स -**
  - **तारानाथ** (तिब्बती बौद्ध भिक्षु) द्वारा **कंग्यूर** और **तंग्यूर** - **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का लेखा-जोख**

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- **दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।**
- **मेसोपोटामिया** और **मिस्र** की सभ्यताओं के **समकालीन।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप** के **उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित**।
- **1853** - ए कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
- **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्विक स्थल)। इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- मूलतः एक **नदी सभ्यता।**
- **कांस्य युगीन सभ्यता।**
- इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है** क्योंकि **सर्वप्रथम 1921** में **पाकिस्तान के** शाहीवाल जिले के **हड़प्पा नामक स्थल** से **इस सभ्यता की जानकारी** प्राप्त हुई।

विद्वानों के विचार	उत्पत्ति
ई.जे.एच. मकाय	सुमेर (दक्षिणी मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवास के कारण
डीएच गॉर्डन और मार्टिन व्हीलर	पश्चिमी एशिया से लोगों के प्रवास के कारण
जॉन मार्शल और वी. गॉर्डन चाइल्ड	मेसोपोटामिया सभ्यता का एक उपनिवेश जिसका विदेशी मूल था
एस. आर. राव और टी. एन. रामचंद्रन	आर्यों द्वारा निर्मित
स्टुअर्ट पिगट और रोमिला थापर	ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पन्न
डीपी अग्रवाल और अमलानंद घोष	ईरानी-सोठी संस्कृति से उत्पन्न

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी**
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)

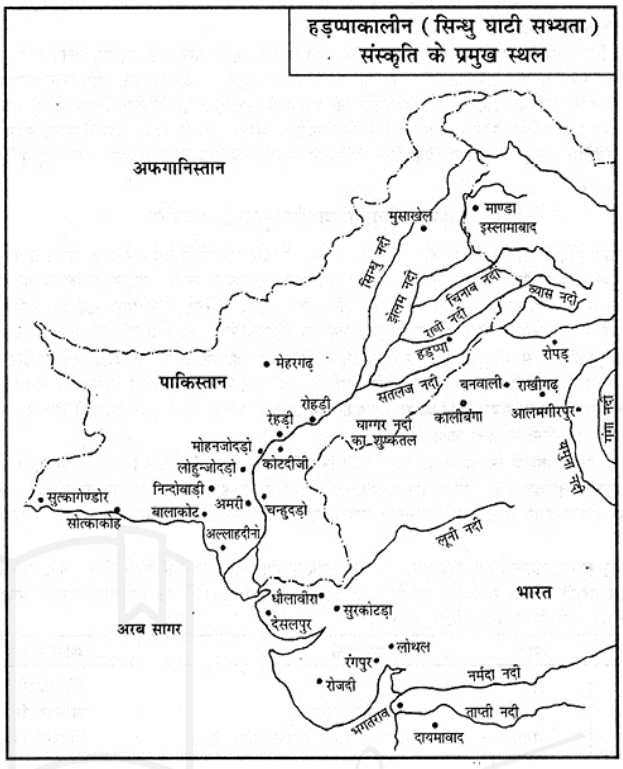

हड़प्पा सभ्यता के चरण

1. प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
- एक आद्य-शहरी चरण।
- गांवों और कस्बों का विकास देखा गया।
- विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
- फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
- स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
- सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

2. परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
- सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

3. उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
- स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आदि।

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारो की दो पंक्तियाँ। • यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले • ताबूत शवाधान • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा • तांबे की बैलगाड़ी • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक • कांस्य के बर्तन। • गढ़(उठे हुए भू भाग पर) • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार (आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा • देवी माँ की मुहर • योगी की मूर्ति • पशुपति मुहर • दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति • मेसोपोटामिया की मुहरें • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बंटा हुआ • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) • चावल की भूसी के साक्ष्य • दोहरा शावाधन • अग्नि वेदियां • जहाज का टेराकोटा मॉडल • माप के लिए हाथीदांत का पैमाना • फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप • बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल • कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियां • पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग • कुओं वाले घर • जल निकासी व्यवस्था नहीं • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते है
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली • तूफानी जल निकासी व्यवस्था • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख)

		• 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।
रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य
बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण • हल का टेराकोटा मॉडल • कोई जल निकासी प्रणाली नही • जौ के दाने • लापीस लाजुली (राजवर्त) • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल • एक छिन्न हुई महिला आकृति
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान • भांड शवाधान • अंडाकार कब्र
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य • अंडाकार गर्त शवाधान • ताम्बे की कुल्हाड़ी
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई तांबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी)

सनौली-

2005 में सनौली उत्खनन 1.0

- 116 कब्रों की खोज की गई।
- **ताम्रपाषाण काल में भारत के सबसे बड़े ज्ञात कब्रिस्तान में से एक के रूप में संदर्भित।**
- **शवाधान** सिंधु घाटी सभ्यता से **अलग** हैं।
- **शरीर के पास व्यवस्थित फूलदान**, **कटोरे** और **बर्तन।**
- **सैनिकों के शवों** के साथ **दबे बर्तनों में चावल** के साक्ष्य मिले।
- **8 एंथ्रोपोमोराफिक आंकड़े** (कुछ ऐसा जो इंसानों जैसा दिखता है)।
- मानवरूपी आकृतियाँ मिली।

2018 में सनौली उत्खनन 2.0

- **2018** में फिर से **प्रकाश में आया** जब एक **किसान ने खेत की जुताई करते समय** जमीन में **पुरावशेष** पाए जाने **की सूचना दी।**
- **घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ** (लगभग 5000 वर्ष पुराने) पाए गए।
- **तांबे की तलवार, युद्ध ढाल** आदि जैसे कई हथियार **पाए गए**।
- इस बार **मृदभाण्डों** के साथ **लकड़ी के चार पैरों वाले ताबूत**
- **जानवरों को काबू करने के लिए चाबुक** मिला है, जिसका अर्थ है कि यहाँ रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- **महिला** + **पुरुष योद्धा** भी तलवारों के साथ दबे पाए गए हैं।
- हालांकि **दफनाने से पहले उनके टखनों के नीचे के पैरों को काट दिया गया था**।

मृदभाण्ड:

- **गैरिक मृदभांड** (OCP) संस्कृति।
- **उत्तर परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के समान** लेकिन कई अन्य पहलुओं में इससे अलग है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

1. **<u>नगर नियोजन-</u>**
   - **किलाबंधित**
   - **सुनियोजित सड़कें**
   - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
   - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
     - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
     - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
   - **हड़प्पा** और में **मोहनजोदाडो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)

- कस्बों में एक आयताकार ग्रिड पैटर्न या जिसमें **सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं**।
- **1 या 2 मंजिला मकान** थे।
- **मंदिर या महल** जैसी कोई बड़ी स्मारकीय/ एतिहासिक- संरचना **नहीं** पायी गयी है ।
- **निर्माण** के लिए **पकी** और कच्ची **ईंटों** और **पत्थरों** का **उपयोग।**
- **मकान कच्ची की ईंटों** से बने होते थे, जबकि **जल निकासी प्रर्णाली पक्की ईंटों से** बनाई जाती थी।

2. <u>विशाल स्नानागार-</u>

- गढ़ के टीले में
- **ईंटों से बना** एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
- टैंक तक जाने के लिए सीडियाँ थी।
- **माप-** 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
- **टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से** बना था।
- **बगल के कमरे में** एक **बड़े कुएं** से पानी निकाला जाता था , जिसे **नाले में खाली** कर दिया जाता था।
- कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।

3. <u>धान्यागार-</u>

- **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत**, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
- **हड़प्पा**- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
- वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिलीं जो **अनाज ताड़ने के लि**ए थीं, (वहाँ मिले **गेहूँ और जौ के साक्ष्य** से पता चलता हैं।)
- **कालीबंगा**- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।

4. <u>जल निकासी व्यवस्था-</u>

- हर घर में अपना **आंगन, निजी कुआं और हवादार स्नानागार** होता था।
- इन **घरों का पानी गली की नालियों में जाता था** जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
- हड़प्पा के लोग **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान** देते थे ।

5. <u>कृषि-</u>

- सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण **सिंधु क्षेत्र उपजाऊ** था।
- जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध **जलोढ़ मिट्टी का जमाव** हुआ (सिंध क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था)
- जली हुई इंटो से बनी दिवारो की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ ग्रस्त था।
- **बीज नवंबर** में **बोए** जाते थे और **अप्रैल** में फसल काटी जाती थी ।
- **कटाई** के लिए **पत्थर के दरांती** का **उपयोग।**
- **नहरों द्वारा सिंचाई** का **अभाव।** हालाँकि, शोरतुग़ई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
- **पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान** और **बलूचिस्तान** के कुछ हिस्सों में नालियों से घिरे **गबरबंद** या **नालों का निर्माण** किया गया।
- **कालीबंगा** के पूर्व-हड़प्पा चरण में **जुताई के साक्ष्य** मिले हैं ।
- **फसलें**- दो प्रकार के गेहूं और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य)।
- **धोलावीरा** में **जलाशयों का उपयोग** कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
- दुनिया में **कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु** थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
- **हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली** में खोजा गया।
- **वस्तु विनिमय** के लिए **अनाज का उपयोग।** किसान ने अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
- इस अवधि के दौरान **दोहरी फसल की प्रथा** शुरू हुई।

6. <u>पशुपालन-</u>

- लोगों ने **पशुचारण** का **अभ्यास** किया।
- वे **भेड़, मवेशी, बकरी, सूअर और भैंस** जैसे जानवरों को पालते थे।
- **बिल्लियों** और **कुत्तों** को भी पालतू बनाया गया था।
- **हाथियों** को भी पाला गया - **गुजरात।**
- **कूबड़ वाला बैल** - हड़प्पावासियों का पसंदीदा
- **ऊंट** और **गधे** - भार ढोने वाले पशु।
- **खरगोश**, **जंगली पक्षी**, **कबूतर** भी मौजूद थे।
- **गैंडे के** सा**क्ष्य**- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटडा में पाए गए।

7. <u>व्यापार एवं वाणिज्य-</u>

- **वस्तु विनिमय प्रणाली** प्रचलित।
- **पत्थर, धातु, खोल** आदि का **उपयोग करके व्यापार** किया जाता था।
- **मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क** सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड़प्पा मुहरों से स्पष्ट होता है।
- **लोथल** के **बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात** के लिए किया जाता था।
- **निप्पुर** से मिली **मुहर** में **हड़प्पा लिपि** और एक **गेंडे का चित्रण** है।

- **क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया** और **हड़प्पावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख** करता है। इसमें "**मेलुहा**" नाम का उल्लेख है जो **सिंधु क्षेत्र** को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को **संदर्भित करता है।**
- **हड़प्पा की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त** हुई हैं।
- **हड़प्पावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं -** सोना, चांदी, तांबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।
- हड़प्पा के **बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-**
  - **मोहनजोदड़ो से बेलनाकार मुहरों की खोज**,
  - **हड़प्पावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग**,
  - **हड़प्पा में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान** , और
  - **मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।**

बाहरी व्यापार मार्ग-

- सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने **फारस, मेसोपोटामिया और चीन** जैसी कई अलग-अलग सभ्यताओं **के साथ व्यापार** किया।
- **अरब की खाड़ी** क्षेत्र, **एशिया** के **मध्य भागों**, **अफगानिस्तान** के कुछ हिस्सों और **उत्तरी** और **पश्चिमी भारत में व्यापार** करने के लिए भी जाना जाता है।

जिन वस्तुओं का व्यापार किया गया वे थे -

- **टेराकोटा** के बर्तन, **मनके**, **सोना**, **चांदी**, **रंगीन रत्न** जैसे फ़िरोज़ा और लैपिस लाजुली, धातु, चकमक पत्थर, **सीपियाँ** और **मोती।**

आंतरिक व्यापार मार्ग -

- **बलूचिस्तान**, **सिंध**, **राजस्थान**, **चोलिस्तान**, **पंजाब**, **गुजरात** और **ऊपरी दोआब**
- **प्रमुख व्यापार मार्ग -**
  - सिंध और दक्षिण बलूचिस्तान
  - सिंधु के मैदान और राजस्थान
  - सिंध और पूर्वी पंजाब
  - पूर्वी पंजाब और राजस्थान
  - सिंध और गुजरात
- **प्रारंभिक हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग- सिंध-बलूचिस्तान
- **परिपक्व हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग
  - **संभवत: नदी व्यापार।**
  - तटीय मार्ग **गुजरात को मकरान तट से जोड़ते हैं।**

8. <u>भार और मापन-</u>

- वज़न मापन के लिए एक **द्विआधारी प्रणाली** का पालन किया।
- **दशमलव प्रणालियों से अवगत**।
  - **अनुपात की इकाई** 16 समकक्ष से 13.64 ग्राम थी।
  - **16 छटाँक** = 1 सेर और **16 आने** = 1 रुपये के बराबर थे।

- **कच्चे माल के प्रमुख स्रोत -**
  - **चूना पत्थर -** सुक्कुर और रोहडी के चूना पत्थर की पहाड़ियों खनन।
  - **ताम्बा -** खेतड़ी, राजस्थान से ताम्रपाषाण गणेश्वर-जोधपुर संस्कृति और हड़प्पा सभ्यता के बीच संबंध।
  - **टिन -** तोसम (हरियाणा), अफगानिस्तान और मध्य एशिया
  - **सोना -** ऊपरी सिंधु या कर्नाटक के कोलार क्षेत्रों की रेत से।
    - पिकलीहल के मनके
    - **अर्द्ध कीमती पत्थर -** गुजरात और अफगानिस्तान, मनका निर्माण के लिए प्रयुक्त

9. <u>शिल्प उत्पादन</u>

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का **निर्माण** किया जाता था
- **ईंट की चिनाई** की कला जानते थे
- **धातुओं की रंगाई** और उनके **प्रगलन** की कला **जानते** थे
- **सीसा, कांस्य, टिन का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**

(i) <u>प्रस्तर प्रतिमा -</u>

- **परिष्कृत पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ**।
- **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** में पाई गई पत्थर की मूर्तियाँ - **त्रि-आयामी खंडों** के लिए उत्कृष्ट उदाहरण ।
- **उदा**. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़।

(ii) <u>कांस्य कास्टिंग</u>

- **'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग** करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
- इसमें, **मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है** और **सूखने दिया** जाता है - **मोम** को **गर्म** किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने **एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है**। इस प्रकार बनाया गया **खोखला साँचा** पिघले हुए धातु से भर दिया जाता हैं । जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
- **धातु** के **ठंडा होने के बाद**, **मिट्टी** का आवरण **पूरी तरह से हटा** दिया जाता है।
- **धातु ढलाई** एक **सतत परंपरा** प्रतीत होती है।
- **प्रमुख केंद्र-** दैमाबाद, महाराष्ट्र

(iii) टेराकोटा

- **पत्थर और कांसे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता हैं**।
- **गुजरात** और **कालीबंगा** में अधिक **यथार्थवादी।**
- **सबसे महत्वपूर्ण** - देवी माँ।

(iv) मुहर

- लगभग **200 मुहरों की खोज** की गई
- **ज्यादातर स्टीटाइट से बनी** । कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट , चर्ट, हाथी दांत से बनी ।
- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ **चौकोर आकार** की थीं
- **मुख्य** रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग की जाती थी, हालांकि इनका उपयोग **ताबीज के रूप में भी** किया जाता था।
- **मुहरें चित्रात्मक** थीं जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गैंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- **मुहरों की लिपि का अर्थ** अब तक **नहीं निकाला गया है**
- **सबसे महत्वपूर्ण मुहर**- मोहनजोदड़ो से पशुपति महादेव मुहर
- **लोथल**- **फारस की खाड़ी की मुहरें** मिली हैं।

(v) मनके

- **सोने, चांदी, तांबे, कांस्य** और **अर्द्ध कीमती पत्थरों** से बने ।
- मुख्य रूप से **बेलनाकार**
- **लोथल और धोलावीरा**- मनके बनाने की दुकान

10. धातु, उपकरण और हथियार-

- **तांबे-कांस्य के औजार** बनाना जानते थे।
- उन्होंने **तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी** जैसे हथियार बनाने **के लिए चकमक पत्थर की** (रोहड़ी चेर्ट से बने), **तांबे** और **हड्डियों**, **हाथीदांत** के औजारों **का उपयोग** किया।
- **लोहे का ज्ञान नहीं**

11. लिपि-

- **पहली बार 1853 में** खोजी गयी ।
- **पूरी लिपि पहली बार 1923 में** खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
- **सबसे बड़े हड़प्पा शिलालेख** में **26 संकेत** हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
- **लिपि –** चित्रात्मक
- **लेखन की कला से अवगत –** बाएँ से दाएँ लेखन

12. मृदभाण्ड-

- **चाक** और **अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग**
- कृष्ण लोहित मृदपात्र ।
- **भंडारण जार**, **कटोरे**, **व्यंजन**, **छिद्रित जार**, आदि के रूप में **उपयोग** किया जाता है।
- पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षैतिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
- **आधार समतल** था।
- लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चित्रित किया गया था।
- **हड़प्पा -पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियां-**
  - **नाल संस्कृति** (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)
  - **झोब संस्कृति** (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)
  - **क्वेटा** (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा साथ चित्रांकन)।

13. धर्म-

- **धर्मनिरपेक्ष समाज**
- **देवी माँ की पूजा** की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली **अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज** की गई, हड़प्पा में **एक मुहर की खोज** की गई जिसमें **पृथ्वी / देवी माता** को उनके गर्भ से उगने वाले पौधे के साथ दर्शाया गया है।
- **पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा** की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दायीं ओर गैंडा और भैंस से घिरे हुए **,** बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
- **प्रकृति को पूजते थे -** पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
- **पूजे जाने वाले जानवर** - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ पक्षी और गैंडा।
- **पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे**।
  - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
- **मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं**।
- **जादू, आकर्षण और बलिदान** में **विश्वास**।
  - **बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें**।
  - **कालीबंगा**, **बनावली** और **लोथल** की **अग्निवेदी।**

14. राजनीतिक संगठन-

- इतिहासकारों के अनुसार, **व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित**।
- **एक दूसरे से स्वतंत्र शहर**।
- उनके **बीच कोई संघर्ष नहीं**।
- लोगों की **बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम** जैसा संगठन।

सभ्यता का पतन

- **1900 ईसा पूर्व के बाद** पतन शुरू।
- **अन्य स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति धीरे-धीरे फीकी** पड़ गई।
- **उत्तर हड़प्पा चरण** /उप-सिंधु संस्कृति- **कृषि**, **पशुपालन**, **शिकार** और **मछली पकड़ने पर निर्भर थी।**
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ **व्यापार संपर्कों के अंत** के साक्षी बने।
- **लगभग 1200 ईसा पूर्व**, **पंजाब** और **हरियाणा** के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े **धूसर मृदभांड** और **चित्रित धूसर मृदभांड** पाए गए।
- पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में **झूकर संस्कृति का विकास** हुआ। इसे **ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था**।

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन

इतिहासकार	पतन के कारण
गॉर्डन चाइल्ड और स्टुअर्ट पिगट	बाहरी आक्रमण
एच टी लैंब्रिक और एम एस वत्स	अस्थिर नदी प्रणाली
कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएं
स्टीन और घोष	जलवायु परिवर्तन
आर मोर्टिमर व्हीलर और गॉर्डन	आर्यन आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डीपी अग्रवाल	नदी का सूखना
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शेरीन रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर.राव और मैके	बाढ़

" यह भी उद्धृत किया गया है कि **आग और मलेरिया** जैसे संचारी रोगों का प्रसार भी **सिंधु घाटी सभ्यता** के पतन के कारण थे।"

3 CHAPTER वैदिक काल (1500-600BC)

आर्यों की मूल पहचान

- वैदिक युग की **शुरुआत भारत-गंगा के मैदानों पर आर्यों के आधिपत्य से हुई**।
- **आर्य** मूल रूप से **स्टेपी/ मैदानी क्षेत्र में रहते थे।**
- बाद में वे **मध्य एशिया चले गए** और फिर लगभग **1500 ईसा पूर्व भारत के पंजाब क्षेत्र में आ गए**। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने **खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश** किया था।
- वे **सबसे पहले सप्त सिंधु क्षेत्र** (सात नदियों की भूमि) **में आकर बसे**। ये सात नदियाँ - सिंधु, ब्यास, झेलम, परुष्नी (रावी), चिनाब, सतलज और सरस्वती।
- **भाषा**- इंडो-यूरोपीय।
- **औजार** - सॉकेटेड कुल्हाड़ी, कांस्य की कतार और तलवारें।
- **घोड़ों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** (दक्षिणी ताजिकिस्तान और पाकिस्तान में स्वात घाटी से घोड़ों के पुरातात्विक साक्ष्य खोजे गए)।
- वैदिक काल **1500 ईसा पूर्व और 600 ईसा पूर्व के बीच का** था।
- **आर्यों की मूल उत्त्पति -** विभिन्न विशेषज्ञों के मध्य बहस का विषय।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास	
आर्यों का मूल निवास	**विद्वान**
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स म्यूलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्डो
बैक्ट्रिया	जे.सी.रॉड
सप्त सिंधु	डॉ अविनाश चंद्र दास और डॉ संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एल.डी.कला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान/ स्ट्रेपी	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

वैदिक साहित्य

- **वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी** का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।
- **वेद** शब्द का अर्थ है **ज्ञान।**
- वैदिक साहित्य **कई शताब्दियों में विकसित हुआ** और इसे **पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित किया गया**।
- उन्हें बाद में **संकलित और लिखा गया** था,
- **सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि 11वीं शताब्दी** की है।
- **4 वेद** और **प्रत्येक के 4 भाग** हैं - संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद।
- **वेद**

ऋग्वेद	• यह **वेदों में सबसे प्राचीन** है। • **1028 स्तोत्रों का संग्रह**। • **दस मंडलों** या पुस्तकों **में विभाजित**। • **भाषा**- वैदिक संस्कृत। • **उत्पत्ति**- 1500-1000 ई.पू. । • **स्तोत्र सूक्त के रूप में जाने जाते हैं** जो आमतौर पर अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। • ईश्वरीय आनंद की तलाश में **देवी-देवताओं को समर्पित**। • **इंद्र**- **प्रमुख देवता** (स्वर्ग का राजा)। • **अन्य देवता**- आकाश देव**,** वरुण, अग्नि देव और सूर्य देव • **मंडल 2 - 7** - ऋग्वेद का **सबसे पुराना हिस्सा**, उन्हें "**पारिवारिक पुस्तकें**" कहा जाता है क्योंकि वे संतों / ऋषियों के विशेष परिवारों से संबंधित हैं। • **मंडल 8** - ज्यादातर कण्व वंश द्वारा रचित। • **मंडल 9** - भजन पूरी तरह से सोम को समर्पित हैं। • **मंडल 1** - इंद्र और अग्नि को समर्पित। • **मंडल 10** - नदियों की स्तुति करने वाला नदी स्तुति सूक्त इसमें पाया जाता हैं।

	• **एकमात्र जीवित पुनरावृत्ति**- शाकल शाखा। • **उपवेद**- आयुर्वेद
सामवेद	• साम का **अर्थ** है "**माधुर्य**"। • **मंत्रों की पुस्तक**। • **16,000 राग** । • प्रार्थना की किताब या "**मंत्रों के ज्ञान का भंडार**"। • **1875 श्लोकों का उल्लेख**- केवल 75 मूल, शेष ऋग्वेद से। • **उपवेद**- गंधर्व वेद
यजुर्वेद	• यजुर नाम का **अर्थ "बलिदान"** है। • विभिन्न **बलिदानों से जुड़े अनुष्ठानों और मंत्रों** से संबंधित। • **दो प्रमुख विभाग-** ○ **शुक्ल यजुर्वेद/वजस्नेय/श्वेत यजुर्वेद**- इसमें केवल मंत्र होते हैं। इसमें माध्यन्दिन और कण्व पाठ शामिल हैं। ○ **कृष्ण यजुर्वेद** - इसमें मंत्र और गद्य भाष्य शामिल हैं। इसमें कथक, मैत्रायणी, तैत्तिरीय और कपिस्थलम पाठ शामिल हैं। • **वाजसनेयी संहिता**- शुक्ल यजुर्वेद में संहिता। • **उपवेद -** धनुर्वेद
अथर्ववेद	• **ब्रह्मा वेद के नाम से भी जाना जाता हैं**। • मुख्य रूप से **99 रोगों के उपचार पर केंद्रित**। • दो ऋषियों- **अथर्व और अंगिरा से जुड़े।** • उपचार उद्देश्यों के लिए **काले और सफेद जादू का अभ्यास** शामिल है। • **वैदिक संस्कृत में** रचित। • **6,000 मंत्रों** के साथ 730 स्तोत्र हैं जो 20 पुस्तकों में विभाजित हैं। • **दो पाठ -** पिप्पलाद और सौनाकिय संरक्षित हैं। • **मुंडक उपनिषद** और **मांडुक्य उपनिषद अंतर्निहित** हैं। • यह **लोगों की लोकप्रिय मान्यताओं और अंधविश्वासों का वर्णन** करता है। • **उपवेद** - शिल्प वेद

ब्राह्मण-ग्रन्थ

- चारों वेदों के **संस्कृत भाषा में प्राचीन समय में** जो **अनुवाद** थे 'मन्त्रब्राह्मणयोः वेदनामधेयम्' के अनुसार वे ब्राह्मण ग्रंथ कहे जाते हैं।
- **चार मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ** हैं- ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ।
- **वेद संहिताओं के बाद** ब्राह्मण-ग्रन्थों का **निर्माण** हुआ है।
- प्रत्येक वेद में एक य एक से अधिक ब्राह्मण हैं।
- **प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण हैं**।
- **ऋग्वेद** के **दो ब्राह्मण** हैं - (1) ऐतरेय ब्राह्मण और (2) कौषीतकी।
- **ऐतरेय** में **40 अध्याय** और **आठ पंचिकाएँ** हैं, इसमें गवामय, अग्निष्टोमन, द्वादशाह , सोमयागों, अग्निहोत्र तथा राज्याभिषेक ऐतरेय ब्राह्मण जैसा ही है।
- **कौषीतकी** से पता चलता हैं कि **उत्तर भारत में भाषा के सम्यक अध्ययन पर बहुत बल** दिया जाता था।

आरण्यक

- **अध्ययन गाँवों से दूर** अरण्यों/वनों में होता था, इसीलिए इन्हें आरण्यक कहते है।
- **गृहस्थाश्रम में यज्ञविधि का निर्देश** करने के लिए **ब्राह्मण-ग्रन्थ उपयोगी** थे और उसके बाद **वानप्रस्थ आश्रम** में **सन्यासी आर्य यज्ञ के रहस्यों और दार्शनिक तत्वों का विवेचन** करने वाले आरण्यकों का अध्ययन करते थे।
- **उपनिषदों का विकास इन्हीं आरण्यकों से** हुआ। आरण्यको का **मुख्य विषय आध्यात्मिक** तथा **दार्शनिक चिंतन** है।

उपनिषद

- चारों वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषद गिनाये गए हैं, किन्तु **11 उपनिषद ही अधिक प्रसिद्ध** हैं-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर।
- इनमें **छान्दोग्य और बृहदारण्यक अधिक प्राचीन** हैं।

वेदान्त

- **वेदों का "निष्कर्ष"** (अंत), भारत का **सबसे पुराना पवित्र साहित्य** है।
- **उपनिषदों (वेदों का विस्तार) पर लागू** होता है।
- **वेदांत मीमांसा** ("वेदांत पर चिन्तन**"), उत्तरा मीमांसा** ("वेदों के अंतिम भाग पर चिन्तन"), और **ब्रह्म मीमांसा** ("ब्राह्मण पर चिन्तन")।
- **3 मौलिक वेदांत ग्रंथ -**
  - **उपनिषद** (बृहदारण्यक, चंदोग्य, तैत्तिरीय और कथा जैसे लंबे और पुराने उपनिषद सबसे पसंदीदा हैं) ।
  - **ब्रह्म-सूत्र** (वेदांत-सूत्र), उपनिषदों के सिद्धांत की बहुत संक्षिप्त, एक-शब्द की व्याख्या।

- **भगवद्गीता** ("भगवान का गीत") अपनी अपार लोकप्रियता के कारण, उपनिषदों में दिए गए सिद्धांतों के समर्थन के लिए तैयार की गई थी।

- **बलिदान, समारोहों की निंदा** करता है और **वैदिक काल के अंतिम चरण** को दर्शाता है।

वेदांग

- स्मृति ग्रंथों का हिस्सा क्योंकि **वे परंपरा द्वारा सौंपे जाते हैं**।
- वेदांग का **शाब्दिक अर्थ "वेदों के अंग"** है।
- **600 ईसा पूर्व के दौरान संग्रहित हुआ**।
- **पूरक ग्रंथ**- वैदिक परंपराओं की समझ से संबंधित है।
- **मानवीय मूल** के माने जाते हैं और **सूत्रों के रूप में लिखे** गए हैं (विभिन्न विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले संक्षिप्त कथन हैं)।
- **6 वेदांग** इस प्रकार हैं-

1. **शिक्षा -**
   - **स्वर शास्त्र का अध्ययन।**
   - यह संस्कृत वर्णमाला के अक्षरों और वैदिक पाठ में शब्दों को जोड़ने और व्यक्त करने के तरीके पर केन्द्रित हैं।
2. **छंद -**
   - पद्य का अध्ययन, काव्य सामग्री से संबंधित।
   - प्रत्येक पद्य में अक्षरों की संख्या, उनके भीतर निश्चित **आकार/रूप का विश्लेषण** शामिल है।
3. **व्याकरण -**
   - विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों और वा**क्यों के निर्माण** को उपयुक्त को स्थापित करने के लिए व्याकरण और भाषा विज्ञान का विश्लेषण।
4. **निरुक्त -**
   - **व्युत्पत्ति विज्ञान** का **अध्ययन**, विशेष रूप से **पुरातन शब्दों के अर्थ को समझाने** के **संबंध** में।
5. **कल्प -**
   - **अनुष्ठान निर्देशों पर केन्द्रित** (बहुत पुराने और अप्रचलित) ।
   - **जीवन की घटनाओं से जुड़े संस्कार**, विवाह, जन्म और अन्य अनुष्ठानों के लिए वर्णित प्रक्रियाओं से संबंधित। यह व्यक्तिगत कर्तव्य और उचित आचरण की अवधारणाओं का भी अन्वेषण करता है।
6. **ज्योतिष -**
   - **शुभ समय का अध्ययन**, जो अनुष्ठानों का मार्गदर्शन और समय-निर्धारण करने के लिए ज्योतिष और खगोल विज्ञान का उपयोग करने की वैदिक प्रथा पर आधारित है।

वेदांग	अंगों से तुलना
शिक्षा	पैर
छंद	हाथ
व्याकरण	आंखें
निरुक्त	कान
कल्प	नाक
ज्योतिष	चेहरा

प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)

भौगोलिक पृष्ठभूमि

- **सप्त सिंधु** नामक सात नदियों की भूमि/देश में आकर रहने लगे।
- उनके क्षेत्र में **अफगानिस्तान**, **पंजाब** और **हरियाणा** के वर्तमान भाग **शामिल** हैं।
- **सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित** है और **सरस्वती सबसे अधिक पूजनीय** (पवित्र नदी) है।
- **हिमालय** या **गंगा** का **कोई उल्लेख नहीं**।
- **समुंद्र** को **पानी** के **संग्रह** के रूप में जाना जाता हैं, सागर के रूप में नहीं।

राजनीतिक संरचना

- राजन के नाम से जाने जाने वाले राजा के साथ **राजशाही रूप।** राजशाही रूप, राजा को राजा के नाम से पुकारा जाता था।
- **पितृसत्तात्मक परिवार।**
- ऋग्वैदिक काल में **जन सबसे बड़ी सामाजिक इकाई** थी।
- **सामाजिक समूहीकरण :- कुल** (परिवार) → **ग्राम** → **विसु** → **जन।**
- **जनजातीय सभाओं को सभा और समितियाँ कहा जाता** था।
- आदिवासी राज्यों के **उदाहरण -** भरत, मत्स्य, यदु और पुरु।

सामाजिक संरचना

- **महिलाओं को सम्मानजनक स्थान** प्राप्त था।
- उन्हें **सभाओं** और **समितियों में भाग लेने की अनुमति** थी।
- **महिला विद्वान** थीं (अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववर और घोष)।
- **एकपतित्व** का **प्रचलन** था लेकिन **राजघरानों** और **कुलीन परिवारों में बहुविवाह** होता था।
- **बाल विवाह अप्रचलित** ।
- **सामाजिक भेद-भाव मौजूद** थे लेकिन **कठोर** और **वंशानुगत नहीं** थे।

आर्थिक संरचना

- वे **चरवाहे** और **पशुपालन** करने वाले लोग थे।
- वे **कृषि** का अभ्यास करते थे ।
- **परिवहन के लिए नदियों का उपयोग** करते थे।
- **सूती** और **ऊनी कपड़ों** को काटकर इस्तेमाल करते थे।
- प्रारंभ में, **व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से** किया जाता था, लेकिन बाद में **'निष्का' नामक सिक्कों का उपयोग** किया जाने लगा।

शिक्षा

- **मंत्रों का पाठ** किया - **छात्रों द्वारा दोहराया गया।**
- **उद्देश्य** - व्यक्ति की बुद्धि को तेज करना और उसके चरित्र का विकास करना।

- मुख्य रूप से **चरित्र में धार्मिक** और पिता द्वारा अपने **पुत्रों को प्रदान** की गई ।
- इस बारे में **कोई निश्चितता नहीं** है कि **लेखन की कला लोगों को ज्ञात थी या नहीं**।

संस्कृति और धर्म

- **प्रकृतिवाद बहुदेववाद**- वे प्राकृतिक शक्तियों जैसे पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा, आदि को देवताओं के रूप में पूजते थे।
- **पूजा की विधि-** यज्ञ।
- **प्रमुख देवता**-
  - **इंद्र** (गड़गड़ाहट के देवता) - सबसे महत्वपूर्ण देवता जिन्हें 250 भजन समर्पित किए गए हैं। पुरंदर या किलों को तोड़ने वाला भी कहा जाता है।
  - **अग्नि** (अग्नि के देवता) - दूसरे सबसे प्रमुख देवता। भगवान और लोगों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। जिन्हें 200 भजन समर्पित किए गए हैं।
- **महिला देवता** - उषा और अदिति।
- **कोई मंदिर नहीं** और कोई मूर्ति पूजा नहीं।
- **ऋग वैदिक भजन** ('सूक्ति') देवी-देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं।
- **पूजा** और **बलिदान** - मुख्य रूप से 'प्रजा और पशु' के लिए यानी बढ़ती आबादी, मवेशियों की रक्षा, पुत्र प्राप्ति और बीमारी के खिलाफ किए जाते थे।
- **महत्वपूर्ण पुजारी**- महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र।

ऋग्वेदिक युग में प्रयुक्त शब्द

गोधुली	समय का मानक
गव्युति	दूरी का मानक
दुहित्री	गाय का दोहन करने वाली
गोत्र	शासन
गण	वंशावली
गौरी	बैल
गौजीत	गाय का विजेता
वाप	बोना
श्रीनि	दरांती
क्षेत्र	खेती की भूमि
उर्वर	उपजाऊ क्षेत्र
धान	अनाज
घृत	घी
गोघना	अतिथि, जिन्हें पशुओं का मांस खिलाया जाता था
यव	जौ

उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

भौगोलिक विस्तार

- **आर्य पूर्व की ओर बढे** और **पश्चिमी** और **पूर्वी उत्तर प्रदेश** (कोसल) और **बिहार पर कब्जा** कर लिया।
- धीरे-धीरे **ऊपरी गंगा घाटी में बस ग**ए।
- भारत के **तीन विस्तृत विभाजन** है-
  - **आर्यावर्त** (उत्तर),
  - **मध्यदेश** (मध्य भारत) और
  - **दक्षिणापथ** (दक्षिण)

राजनीतिक संरचना

- **छोटे राज्यों को मिलाकर महाजनपद जैसे बड़े राज्य** बनाए गए।
- **'जन' 'जनपद' बनने के लिए विकसित हुआ और राजा की शक्ति** में **वृद्धि** हुई।
- **बलिदान**- राजसूय (अभिषेक समारोह), वाजपेय (रथ दौड़) और अश्वमेध (घोड़े की बलि) - राजा द्वारा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए किए जाते थे।
- **राजा की उपाधियाँ-** राजाविस्वजानन, अहिलभुवनपति, विराट, भोज, एकरात और सम्राट।
- **राजा का पद वंशानुगत** हो गया।
- **सभाओं** और **समितियों का महत्व कम** हो गया।
- **"राष्ट्र" शब्द का प्रयोग पहली बार हुआ**।
- **आदिवासी सत्ता प्रादेशिक** बन गई।
- **कुरु 'जनपद' की राजधानियाँ-** हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ।
- **राजत्व की उत्पत्ति के संबंध में 2 सिद्धांत।**
  - **ऐतरेय ब्राह्मण** → राजत्व की उत्पत्ति की आम सहमति से चुनाव के तर्कसंगत सिद्धांत की व्याख्या की।
  - **तैत्रिरिय ब्राह्मण** → राजत्व की दिव्य उत्पत्ति की व्याख्या की।
- **राजा के पास पूर्ण शक्ति** थी - सभी विषयों का स्वामी।
- **शतपथ ब्राह्मण** - राजा अचूक और सभी प्रकार के दण्डो से मुक्त ।
- **ऋग्वैदिक काल की सभा बंद** कर दी गई।
- **राजा ने युद्ध**, **शांति** और **राजकोषीय नीतियों** जैसे मामलों **पर समिति** की सहायता और **समर्थन माँग ।**
- **सरकार** - इस अर्थ में **अधिक लोकतांत्रिक** कि आर्य जनजातियों के नेताओं के अधिकार को राजा द्वारा मान्यता दी गई थी।

इस अवधि के दौरान महत्वपूर्ण राजनीतिक पदाधिकारी-

पद	कार्य
व्रजपति	चारागाह भूमि के प्रभारी अधिकारी
पुरोहित	पुजारी
जीवग्रिभा	पुलिस अधिकारी
सेनानी	सुप्रीम कमांडर-इन-चीफ
ग्रामिणी	गांव का मुखिया
कुलपति	परिवार का मुखिया
स्पासा	जासूस